बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

बाँदा – २१०००१ (उ0प्र0)

Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 112 /2024) **Year: 6th**

जिला: बाँदा	जारी करने की तिथि: 21/08/2024

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	शाक-भाजी	➢ यदि बेलयुक्त सब्जियों यथा कद्दू, खीरा, करेला, तरोई, लौकी आदि, लोबिया, मिर्च, बैगन, टमाटर तथा भिंडी की बुआई उठी हुई क्यारियों अथवा मेडियों पर न की गई हो तो खेत से जल निकासी का उपयुक्त प्रबंध करें। ➢ बेहतर होगा कि मिट्टी में भरपूर कंपोस्ट मिलाकर निर्धारित दूरी पर बनी मेड़ियों को काली पॉलीथिन की चादर से ढककर निश्चित दूरी की अंतराल पर छेद करके बेलयूक्त सब्जियों के बीज की बुआई अथवा बैगन, टमाटर, मिर्च की रोपाई करें। ऐसा करने से आवश्यक नामी संरक्षण तथा खर पतवार नियंत्रण किया जा सकता है। ➢ उपलब्धता के आधार पर तार, रस्सी अथवा झाड़ियों का पंडाल निर्माण कर बेलयुक्त सब्जियों को ऊपर चढ़ाएं। ➢ फसलों में फल छेदक, तना छेदक, माहू जैसे कीड़ों का प्रकोप हो सकता है अतः विशेषज्ञ के अनुसंशा अनुसार प्रबंधन करें। ➢ खेत में उचित जल निकासी की व्यवस्था करें।
2-	शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन	➢ इस मौसम की फसलों में खरपतवार की समस्या अधिक होती है ५ समय समय पर निराई गुड़ाई करते रहने से इस पर नियंत्रण रखा जा सकता है । ➢ ाान की फसल में २५ दिन की अवस्था पर बिस्पायरिबैक सोडियम अथवा साथी नामक शाकनाशी का २५ ग्राम मात्रा का प्रयोग करना चाहिए । ➢ उरद एवं अरहर की फसल में इमेजाथापिर नामक शाकनाशी का प्रयोग खड़ी फसल में किया जाना चाहिए । ➢ तिल की फसल में खरपतवार नियंत्रण हेतु क्युजालोफोप इथाइल नामक शाकनाशी की ५० ग्राम सक्रिय तत्व प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करना चाहिए । ➢ शाकनाशियों का प्रयोग हमेशा फ्लेट फैन नाजल से करना चाहिए । ➢ तिल की फसल जल भराव के प्रति अधिक संवेदनशील होती है अतः जल निकास का समुचित उपाय करना चाहिए ।

		➢ इस समय कृषित एवं आकृषित भूमि पर, घरों के आस पास, सड़क के किनारे आदि जगहों पर गाजर की तरह पत्ती वाला सफेद फुलयुक्त पौधा बहुतायत में पाया जाता है । ➢ इस पौधे को गाजरघास य पार्थेनियम कहा जाता है । यह एक सामाजिक समस्या है और इसका निवारण सामाजिक सहयोग से ही हो सकता है । ➢ गाजरघास मानव, फसल एवं पशु स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है इस पौधे को जड़ सहित उखाड़ फेंकना चाहिए इसे उखारते समय इसके सीधे संपर्क में आने से बचना चाहिए । ➢ इसके रोकथाम के लिए ग्लाय्फोसेट नामक रासायनिक खरपतवारनाशी की १०० मिली मात्रा प्रति टैंक (१५ ली ०) पानी की दर से मौसम साफ रहने पर छिड्काव करें। ➢ धान की फसल में कल्ले व पुष्प गुच्छ बनने की अवस्था अत्यंत संवेदनशील होती है इस अवस्था में समुचित जल प्रबंधन अति आवश्यक होता है जल की ५ से ८ सेमी गहराइ हमेशा बनाये रखना चाहिए । ➢ ४० से ५० किग्रा यूरियाप्रति एकड़ की दर से कल्ले बनने की अवस्था परप्रयोग करना चाहिए । ➢ ४० से ५० किग्रा यूरियाप्रति एकड़ की दर से पुष्प गुच्छ बनने की अवस्था की अवस्था पर आखिरी बार प्रयोग करना चाहिए । ➢ पोटाश की कमी के लक्षण दिखने पर १०-१५ किग एम्० ओ० पि० प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें । ➢ ०.५ प्रतिशत पोटाश के घोल का छिड़काव करे यदि सूखे के लक्षद उरद या मूंग की फसल पर दिखाई दे । ➢ दलहन व तिलहन फसलों की वृद्धि अच्छी न हो तो १ % जल घुलनशील N P K मिश्रण (१५० ग्राम एक टंकी में) का पड़िय छिड़काव करे ।
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	➢ पशुओं को बाँधने के स्थान (पशुशाला) की छत को साफ व दुरुस्त रखें जिससे पानी का रिसाव न हो। ➢ वर्षा के मौसम में सभी पशुओं को अन्तः परजीवी नाशक दवाई अवश्य देवें क्यूंकि इस ऋतु में अन्तः परजीवी जैसे कृमि इत्यादि कई गुना वृद्धि दर के साथ पशुओं में होते हैं। ➢ वाहय परजीवी जैसे मक्खी, चिचिड़ी, जूँ इत्यादि का प्रकोप भी वर्षा ऋतु में बढ़ जाता है।जिसके बचाव हेतु कीटनाशक का छिड़काव पशुशाला में नियमित अंतराल पर करते रहें। साथ ही पशुशाला के निकट खरपतवार एवं घास इत्यादि न बढ़ने दें। ➢ पशुओं के दानेचारे के भण्डारगृह में भी नमी तथा पानी के जमाव से बचाना चाहिए अन्यथा दाने एवं चारे इत्यादि में कवक एवं फफूंद की वृद्धि हो सकती है और ऐसा भोजन पशुओं को देने से यह पशुओं में कैंसर का कारण भी बन सकता है। अतः यह सुनिश्चित करें की पशुओं की भोजन सामग्री सूखी जगह में संग्रहीत करे।
4–	**कीट–प्रबंधन**	➢ धान में पत्ती लपेटक के नियंत्रण हेतु खेत की निगरानी कर प्राकृतिक शत्रुओं (परभक्षी) का फसल वातावरण में संरक्षण करें। क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0

		1.25 ली0 प्रति0 हे0 की दर से छिड़काव करें। हरा फुदका के नियंत्रण हेतु कार्बोफ्यूरान 3 जी 20 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से बुरकाव करें। भूरा फुदका के नियंत्रण हेतु यदि सम्भव हो तो खेत से पानी निकाल देना चाहिए व यूरिया की टाप ड्रेसिंग रोक देनी चाहिए। डायनोटेफुरान 0.5 ग्राम प्रति लीटर अथवा पाईमेट्रोजिन 0.6 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार छिड़काव करें। ➢ मक्का/ज्वार/बाजरा में पत्ती लपेटक व अन्य कीट के नियंत्रण हेतु खेत एवं मेड़ों को घास मुक्त रखना चाहिये एवं मेड़ों की छटाई करना चाहिये। फसल की साप्ताहिक निगरानी करना चाहिये। रासायनिक नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 1.50 लीटर मात्रा का 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से छिड़काव करना चाहिये। ➢ मक्का में फाल आर्मीवर्म के नियंत्रण हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट कीटनाशी की 4 ग्राम मात्रा प्रति 10 लीटर की दर से प्रयोग करें अथवा क्लोरंतरनिलीप्रोल रसायन का 4 मिलीलीटर प्रति 10 लीटर की दर से प्रयोग करें। ➢ उर्द/मूँग में रोग के वाहक कीट सफेद मक्खी की रोकथाम के लिये पीला चिपचिपा ट्रैप का प्रयोग करें व इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 3 मिली0 को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। ➢ टमाटर, फूलगोभी, मिर्च, शिमला मिर्च, पत्तागोभी, बैगन की नर्सरी में प्रारम्भ में सफेद मक्खी के प्रवेश को रोकने के लिए लो–टनल पॉलीहाउस का प्रयोग करें। पूर्व में रोपित बैगन की फसल में कलंगी एवं फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु 10 मीटर के अन्तराल पर प्रति हेक्टेयर में 100 फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क नर कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए। सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए।
5–	**पादप रोग प्रबंधन**	➢ धान की फसल में जीवाणु झुलसा (बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट) रोग के लक्षण प्रकट होने पर 100 ग्राम स्ट्रेप्टोसायाक्लिन और 500 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराईड का 500 लीटर जल में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर छिडकाव करें।10 से 12 दिन के अन्तर पर आवश्यकतानुसार दूसरा एवं तीसरा छिडकाव करें। ➢ उर्द व मूंग के पीले मोजैक विषाणु रोग के लक्षण दिखाई देने पर विषाणु वाहक कीट के नियंत्रण हेतु थायोमेथोक्साम 25 प्रतिशत डब्लू0 जी0 3 ग्राम को 10 लीटर अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 3 मिली0 को 10 लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिन के अन्तराल पर आवश्यकता अनुसार छिड़काव करें।

		➢ भिण्डी के पीतशिरा (मोजैक) व पत्ती मरोड़ विषाणु रोग के लक्षण दिखायी देने पर रोग से ग्रसित पौधों को उखाड कर मिट्टी में दबा देना चाहिए यदि समस्या अधिक है तो विषाणु वाहक कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड के 17.8 प्रतिशत एस0एल0 का 3 मिली प्रति 10 लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिन अन्तराल पर छिड़काव करें। ➢ सब्जियों जैसे फूलगोभी, टमाटर, मिर्च, व बैगन की पौधशाला मे पौधगलन रोग की समस्या आने पर किसान भाई कॉपर ऑक्सीक्लोराईड (ब्लाईटाक्स 50) का 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी अथवा साफ (कार्बेण्डाजिम 12 प्रतिशत़ मेन्कोजेब 63 प्रतिशत) का 2 ग्राम प्रति लीटर पानी का भली प्रकार से छिड़काव करें। ➢ अदरक व हल्दी की फसल में प्रकन्द सड़न रोग के लक्षण दिखाई देने पर खेत में जल निकास की समुचित व्यवस्था करें व रिडोमिल एम. जेड. 72 का 1.5 ग्राम प्रति लीटर पानी का घोल बना कर जड़ पर ड्रेचिंग (भली प्रकार) छिड़काव करें।
6.	**बागवानी. प्रबंधन**	**फलो में पौधरोपण :** अगस्त माह में प्रायः एक दो अच्छी बारिश होती है तथा वातावरण में नमी की मात्रा काफी होती है, यह समय किन्नू, माल्टा, अमरूद तथा पपीता जैसे फलवृक्ष लगाने का उत्तम समय है। परन्तु ध्यान रहे कि फलपौध उत्तम दर्जे का ही हों। पौधों को निर्धारित स्थान पर उतना ही गाड़े जितना वे नर्सरी में थे। पौधों की देख – रेख अच्छी प्रकार से करें। मूलवृन्त पर नये फुटान को हटा दें तथा पौधों को सीधा रखने के लिए बनछटी का प्रयोग करें। नियमित सिंचाई करें। **वायु अवरोधक :** वायु अवरोधकों को उत्तर – पष्चिम दिशा में इसी माह में लगायें। यदि इन्हें बाग के चारों और लगाया जायें तो और अच्छा होगा। अर्जुन,, आंवला, देशी जामुन, देषी देशी आम के पौधे इस क्षेत्र के लिए उत्तम वायु अवरोधक है। वायु अवरोधकों को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए बडे पौधों के मध्य या दूसरी पंक्ति में छोटे आकार के पौधे जैसी देशी बेर, जटटी–खटटी, करौंदा, शहतूत आदि लगायें। वायु अवरोधक वृक्षों की आपस मे दूरी 4–5 मीटर रखें। इन वृक्षों की जड़ों को मुख्य बाग में जाने से रोकने के लिए 1 से 1.5 मीटर गहरी खाई इन वृक्षों के पास बाग की और खोद दें। **नर्सरी के कार्य** ➢ मूलवृन्त तैयार करने के लिए आम के गुठलियों का रोपण नर्सरी में करना चाहिए ➢ आम अमरूद मे विभेद कलम प्रवर्धन करना चाहिए ➢ आम में साईड ग्राटिंग का कार्य करना चाहिए ➢ मूलवृन्त तैयार करने हेतु रंगपुर लाइम , जट्टी – खट्टी के बीज की बुवाई नर्सरी में करें । बिजाई से पूर्व बीजे को 52 सेटीग्रेड तापमान वाले पानी से दस मिनट तक उपचारित करें, ताकि फॉइटोफथोरा बीमारी से बच जा सकें। **आम** सिल्ली कीट की रोकथाम के लिए 5–10 अगस्त के बीच एजाडीरेक्टिन 3000 पीपीएम ताकत का 2 मिली लिटर को पानी में घोलकर 10–15 दिनों के अंतराल पर 3 छिड़काव करें । कीट प्रभावित टहनियों के नुकीली गाँठो की छंटाई करें । **पपीता** कॉलर रॉट के प्रकोप से पौधे जमीन के सतह से ठीक ऊपर गल कर गिर जाते है । इसके नियंत्रण के लिए पौधशाला से पौधों को रिडोमिल (2 ग्रा./ली.) दवा का छिड़काव करें, खेत में जलभराव न होने दें और जरूरत पड़ने पर खड़ी फल में भी रिडोमिल (2 ग्रा. /ली.) के घोल से जल सिंचन करें ।

		केला पनामा विल्ट के रोकथाम के लिए बैविस्टीन के 1.5 मिली. ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल से पौधों के चारों तरफ की मिट्टी को 20 दिन के अंतराल से दो बार छिड़काव कर देना चाहिए । **अमरुद** जस्ता तत्व की कमी होने से पत्तियों का पिला पड़ना, छोटा होना तथा पौधों की बढ़वार कम हो जाने के लक्षण मिलते है । इसके नियंत्रण के लिए 2 प्रतिशत जिंक सल्फेट का छिड़काव अथवा 300 ग्रा. जिंक सल्फेट का पौधों की जड़ों में देना लाभप्रद पाया गया है । **कटहल** तना बेधक कीट के नियंत्रण हेतु छिद्र को किसी पतले तार से साफ करके नुवाक्रान का घोल (10 मिली.ली.) अथवा पेट्रोल या केरोसिन तेल के चार–पाँच बूंद रुई में डालकर गीली चिकनी मिट्टी से बंद कर दें । इस प्रकार वाष्पीकृत गंध के प्रभाव से तना बेधक कीट मर जाते हैं एवं तने में बने छिद्र धीरे–धीरे भर जाते हैं ।
7.	**वानिकी प्रबंधन**	➢ पॉलीथीन थैलियों जिनमें बीज अंकुरित नहीं हुए हैं को स्वस्थ व विकसित पौध से प्रतिस्थापित/प्रत्यारोपित करें। ➢ पौधशाला को खरपतवार से मुक्त रखने तथ जल निकासी नालियों/चैनलों को साफ रखें। ➢ पौधशाला में आद्रपतन या कमरतोड रोग की रोकथाम हेतु कार्बेन्डाजिम (10ग्राम)+मेन्कोजेब(25ग्राम) प्रति लीटर पानी के घोल से रोक के लक्षण दिखते ही सिंचाई करें। ➢ जून / जुलाई माह में रोपित पौध, जो कि मृत हो गए हैं, स्वस्थ पौधों से प्रत्यारोपित करें। ➢ रोपित पौधें के थालों में निराई गुड़ाई करें तथा साथ ही साथ उजागर जड़ों को पुनः मिट्टी से आच्छादित करें।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार 2. डॉ दिनेश साह 3. डॉ ए.सी. मिश्रा 4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव 5. डॉ राकेश पाण्डेय	6. डॉ मयंक दुबे 7. डॉ दिनेश गुप्ता 8. डॉ पंकज कुमार ओझा 9. डॉ सुभाष चंद्र सिंह